जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मंदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है

(पांडुशिला ,सिंघासन, छत्र, चवर प्रातिहार्य,जाप माला ,मंगल कलश, पूजा बर्तन ,चंदोवा,तोरण ,झारी ,

(शुद्ध चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किया जाता है)

नोट:-हमारे यहाँ घरो में उपयोग हेतु ,साधुओ के उपयोग हेतु , अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है

SOURABH KUMAR JAIN

9993602663

77229 83010

SOURABHJN1989@GMAIL.COM

॥ श्री अनन्त सिद्धेभ्यो नमः ॥

विशद लघु मृत्युञ्जय विधान

(n§. AmemYa Or Ho$ g§ñH¥$V {dYmZ Ho$ AmYma na)

aM{`Vm - प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद लघु मृत्युञ्जय विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक **आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

संस्करण - प्रथम-2013 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - ब्र. किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, नेहरू बाजार
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन (ठेकेदार)
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 09414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा ● मो.: 09416882301)

4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

5. जय अरिहन्त ट्रेडर्स (हरीश जैन)
6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली, मो. 9818115971

मूल्य - 51/- रु. मात्र

-ः अर्थ सौजन्य ः -

श्रीमती अलका जैन एवं श्री सौरभ जैन सपरिवार

3 सी/46, न्यू रोहतक रोड, नई दिल्ली-110005

मो. 9810061204

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, 2363339 मो.: 9829050791

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव–शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण ।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान ।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ।।1 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरी का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ।।2 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ।।3 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए ।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ।।4 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ।।5 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ।।6 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी ।।7 ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा– पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख–शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व–पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा–कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता श्रेष्ठ प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तू पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख–दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति अरु धर्मादिक का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा– नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ ! हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्तवन

दोहा– कर्म घातिया से रहित, होते हैं तीर्थेश।
मृत्युञ्जयी हैं लोक में, देते सद् सन्देश।।

(शम्भू छंद)

दोष अठारह से विरहित हैं, अर्हत् जिन मंगलकारी।
ॐकारमय दिव्य देशना, देते हैं जग उपकारी।।
नित्य निरंजन अक्षय अविचल, कहलाए हैं सिद्ध महान्।
अर्हत् अपने कर्म नशाकर, अतिशय पद पाते निर्वाण।।1।।
भूतकाल में हुए अनन्तक, उनको वन्दन बारम्बार।
तीर्थंकर होंगे भविष्य में, विशद ज्ञान पाके मनहार।।
वर्तमान के चौबिस जिन हैं, उनका हम करते गुणगान।
सप्त भेद केवलज्ञानी के, ऐसा कहते हैं भगवान।।2।।
केवलज्ञान प्रगट होने पर, समवशरण रचते आ देव।
भक्ति भाव से नत होकर के, वन्दन करते विनत सदैव।।
धर्मचक्र ले यक्ष चतुर्दिक, आगे चलते हैं शुभकार।
होकर भाव विभोर इन्द्र कई, बोला करते जय–जयकार।।3।।
मृत्युञ्जय अनुपम विधान यह, करने वाले जग के जीव।
सब विघ्नों का नाश प्रकाशक, भवि जीवों को रहा अतीव।।
सारे जग का वैभव पाते, इन्द्रादिक पद होता प्राप्त।
भव्य जीव अनुक्रम से बनते, कर्म नाश करके जिन आप्त।।4।।
इस विधान की महिमा अनुपम, बृहस्पति भी ना कह पाये।
कौन करे गुणगान लोक में, कहने वाला थक जाये।।
एक बार भी जो विधान यह, भक्ति भाव के साथ करें।
सुख–शांती सौभाग्य प्रदायक, निश्चित ही शिवनार वरें।।5।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

समुच्चय महामृत्युञ्जय पूजा

स्थापना

अर्हत् सिद्ध महर्षि पावन, सहस्राष्ट जिनवर के नाम।
नवदेवों की करें अर्चना, सुर नर विद्याधर अभिराम।।
तिथि देव नवग्रह के स्वामी, द्वारपाल दिग्पाल प्रधान।
मृत्युञ्जय को प्राप्त श्री जिन, का करते अतिशय गुणगान।
सुरभित पुष्पों से करते हम, महामृत्युञ्जय का आह्वान।
सुख शांति आनन्द विशद हो, करते हम विधि से गुणगान।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(आल्हा छन्द)

क्षीरोदधि सम निर्मल जल से, धारा देते हैं हम तीन।
जन्म जरा मृत्यु रोगों को, करने आए हैं हम क्षीण।।
विशद मृत्युञ्जय की पूजा से, शांती मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर चन्दन से घिसकर के, गंध बनाई अपरम्पार।
भव आताप नशाने का हम, उद्यम करते बारम्बार।।
विशद मृत्युञ्जय की पूजा से, शांती मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित अक्षय अक्षत, धवल चढ़ाते हैं मनहार।
अक्षय पद पाने हम आए, सर्व जहाँ में विस्मयकार।।

विशद मृत्युञ्जय की पूजा से, शांती मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी आदी सुरभित, पुष्प चढ़ाते खुशबूदार।
कामबाण हो नाश हमारा, हो जाएँ हम भी अविकार।।
विशद मृत्युञ्जय की पूजा से, शांती मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ताजे नैवेद्य बनाकर, चढ़ा रहे हैं हम रसदार।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, पा जाएँ हम भव से पार।।
विशद मृत्युञ्जय की पूजा से, शांती मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीप जलाकर लाए, यहाँ चढ़ाने को शुभकार।
मोह-तिमिर हो नाश हमारा, बन जाएँ हम भी अनगार।।
विशद मृत्युञ्जय की पूजा से, शांती मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित धूप दशांगी में शुभ, खुशबू का न पारावार।
अग्नी में हम जला रहे हैं, कर्म नाश पाने शिव द्वार।।
विशद मृत्युञ्जय की पूजा से, शांती मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस फल यहाँ चढ़ाते, सेव संतरा आम अनार।
भव सिन्धू से मुक्ति पाएँ, मिले मोक्ष फल का उपहार।।

विशद मृत्युञ्जय की पूजा से, शांती मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।8।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत आदी से, अर्घ्य बनाया विविध प्रकार।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें अब, हो जाए आतम उद्धार।।
विशद मृत्युञ्जय की पूजा से, शांती मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– परम सुगन्धित नीर से, करते शांती धार।
सुख–शांती आनन्द हो, शांती मिले अपार।। *शान्त्ये शांतिधारा*

दोहा– पुष्पाञ्जलि करते विशद, लेकर पुष्प महान।
नव गुण पाने के लिए, करते हम गुणगान।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा– जिन अर्चा से भक्त जन, होते मालामाल।
शुभ मृत्युञ्जय की यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू–छंद)

अर्हन्तों की पूजा करके, भाव सहित गुण गाते हैं।
उनके अनुपम गुण पाने की, सतत भावना भाते हैं।।
सिद्ध अनन्तानन्त हुए हैं, सिद्धशिला पर जिनका वास।
हम भी सिद्धों को ध्याते हैं, करने आठों कर्म विनाश।।1।।

गणधर आदि महाऋषि वर कई, उत्तम तप के धारी हैं।
श्रेष्ठ ऋद्धियों को पाकर भी, विशद कहे अविकारी हैं।।
कर्म निर्जरा करने हेतू, आतम ध्यान लगाते हैं।
विशद ज्ञान को पाने वाले, मृत्युञ्जय हो जाते हैं।।2।।

सहस्राष्ट गुण के धारी जिन, सहस्रनाम को पाते हैं।
नाम मंत्र को जपने वाले, स्वयं सिद्ध बन जाते हैं।।
चन्द्रप्रभु की पूजा करके, नव देवों को ध्याते हैं।
नव कोटी से अर्चा कर नव, क्षायिक लब्धियाँ पाते हैं।।3।।

वर्तमान चौबीसी के हम, तीर्थंकर के गुण गाएँ।
पूजा करने यक्ष–यक्षिणी, मेरे साथ यहाँ आएँ।।
पन्द्रह तिथि देवताओं का, भी हम करते हैं आह्वानन्।
यज्ञ भाग पाओ आकर के, करो प्रभू का आराधन।।4।।

नवग्रह शांति निवारक जिन का, करते भाव सहित अर्चन।
तीन काल में कोई भी ग्रह, आके करें न कोई विघन।।
बीज वर्ण अ ध ठ ह क्ष, स स्वर सकल और ॐकार।
क्षी ल व र फ बीजाक्षर, कला युक्त हैं अपरम्पार।।5।।

दशों दिशाओं से आकर के, दश दिग्पाल करें अर्चन।।
द्वारपाल द्वारे पर रहकर, हरते हैं जो सभी विघन।
महामृत्युञ्जय पूजा होती, तीन लोक में पूज्य त्रिकाल।
सुर नर किन्नर विद्याधर भी, गाते हैं प्रभु की जयमाल।।6।।

(घत्ता छन्द)

जय–जय त्रिपुरारी, आनन्दकारी, तीन लोक मंगलकारी।
मृत्युञ्जय धारी, जिन अविकारी, पूज्य विशद हैं शिवकारी।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मृत्युञ्जय को पूजकर, करें भाव से जाप।
लक्ष्मीपति बनके विशद, पूर्ण नशाएँ पाप।।

इत्याशीर्वादः ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

मृत्युञ्जय पूजन

(स्थापना)

अर्हत् सिद्ध महर्षि गणधर, सहस्रनाम जिन के कल्याण।
जैनागम परमेष्ठी पाँचों, रत्नत्रय शुभ क्षेत्र निर्वाण।।
तीन काल के तीर्थंकर जिन, तीन लोक में रहे महान्।
विशद भाव से हृदय कमल में, करते हैं हम शुभ आह्वान।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हं अ सि आ उ सा अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हं अ सि आ उ सा अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हं अ सि आ उ सा अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-रेखता)

नीर का कलशा लिया भराय, चरण में प्रभु के दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ।।1।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयगिर चंदन लिया घिसाय, चरण में प्रभु के दिया चढ़ाय।
अर्चना करते हम हे नाथ !, चरण में भक्ति भाव के साथ।।2।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल अक्षत का लिया भराय, प्रभू के पद में दिया चढ़ाय।
प्रभू हम आए आपके द्वार, नशे अब मेरा भी संसार।।3।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प हाथों में ले शुभकार, अर्चना करते बारम्बार।
भक्ति अब करो प्रभू स्वीकार, चरण का भक्त खड़ा है द्वार।।4।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस नैवेद्य बनाए आज, चढ़ाने लाए हम जिनराज।
भक्त पर दीजे हे प्रभु ध्यान, करे जो भाव सहित गुणगान।।5।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह घी का लिया प्रजाल, वन्दना करते विशद त्रिकाल।
प्राप्त हो हमको सम्यक् ज्ञान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।6।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित लाये धूप महान, नशाएँ आठों कर्म प्रधान।
विशद यह रही भावना एक, हृदय में जागे परम विवेक।।7।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल लाए यहाँ महान, मोक्ष फल पाए हम भगवान।
मिले शिवपद की हमको राह, और अब नहीं कोई परवाह।।8।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
भक्त की विनती सुनो जिनेश, अर्चना करता यहाँ विशेष।।9।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

मंगल द्रव्य रही शुभकारी, अर्चा हम करते मनहारी।
अर्हन्तों को पूज रचाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।। *शान्त्ये शांतिधारा*

पुष्पाञ्जलि को पुष्प रंगाए, कर पात्रों में लेकर आए।
बोल रहे हम भजनावलियाँ, खिल जाएँ अन्तर की कलियाँ।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

अर्घ्यावली

दोहा- धर्म कहा मृत्युंजयी, मृत्युञ्जय भगवान।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(सखी छंद)

हैं कर्म घातिया नाशी, प्रभु केवल ज्ञान प्रकाशी।
हे अर्हत पदवी धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।1।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अष्ट कर्म के नाशी, हैं सिद्ध शिला के वासी।
प्रभु ज्ञान शरीरी गाए, भवि जिन के पद सिरनाए।।2।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणराज महर्षि जानो, शुभ ऋद्धीधारी मानो।
शुभ दिव्य देशना पाते, भव्यों को मार्ग दिखाते।।3।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री महर्षि गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सहस्रनाम के धारी, जिनवर होते अविकारी।
भवि नाम मंत्र शुभ ध्याते, जिनवर की महिमा गाते।।4।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री सहस्रनामेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है द्वादशांग जिनवाणी, भवि जीवों की कल्याणी।
जिनश्रुत को जो नर ध्याते, वह विशद ज्ञान प्रगटाते।।5।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री जिनमुखोद्भूत द्वादशांग आगमेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र वह गाये, प्रभु मुक्ति जहाँ से पाए।
उनकी पूजा शुभकारी हैं, कर्म विनाशन हारी।।6।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री अरहंत निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेष्ठी पाँच बताए, शिवपथ के राही गाये।
उनको जो प्राणी ध्याते, वे मुक्ति वधू को पाते।।7।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री अर्हत्सिद्धाचार्यउपाध्याय सर्वसाधुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गर्भ जन्म तप जानो, अरु ज्ञान मोक्ष पहिचानो।
यह पञ्चकल्याणक गाये, जो पाके जिन शिव पाए।।8।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पञ्चकल्याणकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्दर्शन ज्ञान बताया, चारित्र रत्नत्रय गाया।
यह धर्म कहा शुभकारी, पाओ जग के नर–नारी।।9।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री सम्यक्दर्शनचारित्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस जिनभूत के गाए, अरु वर्तमान में पाए।
होंगे भविष्य में भाई, हम पूज रहे सुखदायी।।10।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री भूत–वर्तमान–भविष्यत् तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् सिद्धादी गाये, जो मृत्युञ्जय पद पाए।
हम मृत्युञ्जयता पाएँ, निज भाव से पूज रचाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री अर्हन्तादि चरणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– फैला कर्मों का 'विशद', तीन लोक में जाल।
दोष दूर हों मम सभी, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू छंद)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु जग में पावन।
जैनागम जिनधर्म जिनालय, जिन प्रतिमाएँ मन भावन।।
दोष अठारह रहित कहे हैं, छियालिस गुणधारी अर्हंत।
कर्मघातिया को विनाश कर, पाते केवलज्ञान अनन्त।।1।।

भूत–भविष्य–वर्तमान के, चौबिस जिन के पद वन्दन।
बीस विदेहों में तीर्थंकर, के पद में करते अर्चन।।
अष्ट कर्म को पूर्ण नाशकर, अष्ट मूलगुण पाते सिद्ध।
अक्षय अनुपम अविनाशी पद, पाते हैं जो जगत् प्रसिद्ध।।2।।

गणधर झेलें दिव्य देशना, सहस्रनाम हैं मंगलकार।
परमेष्ठी हैं पञ्च हमारे, मोक्ष मार्ग के हैं आधार।।

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, धारी उपाध्याय गुणवान।
ज्ञान ध्यान तप करें साधना, संतों को देते सद्ज्ञान।।3।।

रत्नत्रय को धारण करके, साधू करते आतम ध्यान।
मूलगुणों का पालन करके, कर्म निर्जरा करें महान्।।
जैन धर्म की महिमा अनुपम, गाता है यह सारा लोक।
अनेकांत अरु स्याद्वाद मय, जैनागम को देते ढोक।।4।।

वीतरागमय कृत्रिमाकृत्रिम, चैत्य कहे हैं अपरम्पार।
चैत्यालय हैं पूज्य लोक में, तिनको वन्दन बारम्बार।।
तीर्थंकर रत्नत्रय धारी, पाते हैं पाँचों कल्याण।
इनकी अर्चा करने वालों, की ना होय जरा भी हान।।5।।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्नत्रय है धर्म प्रधान।
मुक्ती पाते जीव जहाँ से, क्षेत्र कहा वह शुभ निर्वाण।।
जिन की अर्चा करने वाले, धारण करते जो श्रद्धान।
अल्प समय में भव्य जीव वह, स्वयं प्राप्त करते निर्वाण।।6।।

ग्रहारिष्ट भी जिन पूजा से, हो जाते हैं सारे शांत।
और दिशागत विघ्न पूर्णतः, होते 'विशद' पूर्ण उपशांत।।
भूत-पिशाच शाकिनी डाकिन, आदिक की बाधा हो दूर।
ऋद्धि-सिद्धि पुत्रादिक आयू, धन समृद्धि हो भरपूर।।7।।

दोहा- पूजा से जिनराज की, होते कर्म विनाश।
मृत्युञ्जय को प्राप्त कर, होवे ज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी अर्हदादि चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अर्चा अर्हन्तादि की, करती विघ्न विनाश।
मृत्युञ्जय हो जीव यह, पाए शिवपुर वास।।

इत्याशीर्वादः ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजा

स्थापना

तीर्थंकर पद पाने वाले, भरत क्षेत्र के जिन चौबीस।
जिनकी पूजा करते हैं हम, चरणों झुका रहे हैं शीश।।
तीर्थंकर जिन तीन लोक में, कहे गये हैं पुण्य निधान।
विशद हृदय में करते हैं हम, भाव सहित प्रभु का आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई)

जन्म जरादिक रोग सताते, उनसे हम भी ना बच पाते।
हम यह सारे रोग नशाएँ, निर्मल नीर चढ़ा हर्षाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादिक ने हमें सताया, जीवन में भवताप बढ़ाया।
सुरभित चन्दन यहाँ चढ़ाएँ, अपना भव संताप नशाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद ज्ञान हमने ना पाया, चतुर्गती में गोता खाया।
अक्षय पद अब पाने आये, अक्षत यहाँ चढ़ाने लाए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम रोग ने हमको घेरा, जीवन में डाला है डेरा।
इससे अब हम मुक्ती पाएँ, सुमन आपके चरण चढ़ाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा सताती हमको स्वामी, दास बने हम हुए अकामी।
क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ, चरु से प्रभु पद पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में हम भटकाए, सत्पथ प्राप्त नहीं कर पाए।
ज्ञान दीप प्रजलाने आए, दीप जलाकर के यह लाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों से आतम है काला, अंग-अंग में घेरा डाला।
उनसे मुक्ती पाने आए, धूप जलाने को यह लाए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य कर्म से शुभ गति पाते, दुर्गति पाप कर्म पहुँचाते।
मोक्ष महाफल हम पा जाएँ, गतियों में अब ना भटकाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के झंझट में उलझाए, पद अनर्घ्य बिन जगत भ्रमाए।
पद अनर्घ्य हमको मिल जाए, 'विशद' भावना लेकर आए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक निर्मल नीर की, देते हैं त्रय धार।
विश्व शांति की अर्चना, बन जाए आधार।।

(शांतये शांतिधारा)

चढ़ा रहे हम भाव से, पुष्पों का यह हार।
मुक्ती इस भव से मिले, हो जाए उद्धार।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अर्घावली

दोहा- तीर्थंकर चौबिस हुए, जग में महति महान्।
पुष्पाञ्जलि करके यहाँ, करते हम गुणगान।।

मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(चौपाई)

आदिनाथ सृष्टी के कर्त्ता, मुक्ति वधू के हुए जो भर्त्ता।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।1।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ ने कर्म नशाए, फिर तीर्थंकर पदवी पाए।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।2।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्भव जिनवर हुए निराले, शिवपथ श्रेष्ठ दिखाने वाले।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।3।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन पद वन्दन करते, कर्म कालिमा प्राणी हरते।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।4।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ जी साथ निभाते, जीवों को शिवपुर पहुँचाते।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।5।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभु जी शिवपद दाता, जग जीवों के भाग्य विधाता।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।6।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सुपार्श्वजी मंगलकारी, भवि जीवों के करुणाकारी।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।7।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण-पग में चाँद का पाए, चन्द्रप्रभू जी जो कहलाए।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।8।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुविधिनाथ जी विधि बताएँ, मुक्ती प्राणी कैसे पाएँ।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।9।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिन शीतल गुणधारी, शिव पाये बनके अनगारी।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।10।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन श्रेयांस के हम गुण गाते, चरणों में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए ।।11।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री श्रेयनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य जगपूज्य कहाए, चम्पापुर से मुक्ती पाए।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए ।।12।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छंद)

श्री विमलनाथ जिन स्वामी, हो गये प्रभु अन्तर्यामी।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।13।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं गुणानन्त के धारी, जिनवर अनन्त अविकारी।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।14।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु धर्म ध्वजा फहराए, जिन धर्मनाथ कहलाए।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।15।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन शांतिनाथ सुखदाता, हैं जग जीवों के त्राता।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।16।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं तीन पदों के धारी, श्री कुन्थू जिन शिवकारी।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।17।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अरहनाथ को जानो, शिवपथ के दाता मानो।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।18।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं कर्म मल्ल के नाशी, प्रभु मल्लिनाथ शिव वासी।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।19।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मुनिसुव्रत व्रतधारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।20।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नमीनाथ को ध्याते, वह शिवपुर धाम बनाते।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।21।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री नमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों पर दया विचारे, नेमी जिन दीक्षा धारे।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।22।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्ग सहे जो भारी, प्रभु पार्श्व बने शिवकारी।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।23।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वीर वीरता पाए, शिवपुर में धाम बनाए।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।24।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर चौबिस गाये, जो शिव पदवी को पाए।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते ।।25।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– पूज्य कहे चौबीस जिन, तीनों लोक त्रिकाल।
उनकी पूजा कर यहाँ, गाते हैं जयमाल ।।

(छन्द : तोटक)

जय आदिनाथ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
अजितनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़ जोड़ द्वय हाथ नमस्ते ।।

सम्भव भव हर देव नमस्ते, अभिनन्दन जिनदेव नमस्ते।
सुमतिनाथ के पाद नमस्ते, पदम प्रभु पद माथ नमस्ते।।1।।
श्री सुपार्श्व जिनराज नमस्ते, चन्द्र प्रभु पद आज नमस्ते।
पुष्पदन्त गुणवन्त नमस्ते, शीतल जिन शिवकंत नमस्ते।।
जय श्रेयनाथ भगवंत नमस्ते, वासुपूज्य धीवन्त नमस्ते।
विमलनाथ जिनदेव नमस्ते, प्रभु अनन्त जिन देव नमस्ते।।2।।
धर्मनाथ चिद्रूप नमस्ते, शान्तीनाथ अनूप नमस्ते।
जय-जय कुन्थूनाथ नमस्ते, अरहनाथ पद साथ नमस्ते।।
जय मल्लिनाथ भगवान नमस्ते, मुनिसुव्रत व्रतवान नमस्ते।
जय नमीनाथ पद माथ नमस्ते, नेमिनाथ जिन साथ नमस्ते।।3।।
जय पार्श्वनाथ धर धीर नमस्ते, तीर्थंकर महावीर नमस्ते।
विद्यार्थी विज्ञान नमस्ते, निर्गुण हो गुणवान नमस्ते।।
उपकारी जगनाथ नमस्ते, भक्ति भाव के साथ नमस्ते।
श्रद्धा के आधार नमस्ते, व्रतदायक अनगार नमस्ते।।4।।
सम्यक् ज्ञान प्रदान नमस्ते, दिव्य देशनावान नमस्ते।
तीर्थंकर अविकार नमस्ते, जग में मंगलकार नमस्ते।।
मुक्ती पथ दातार नमस्ते, भव से करते पार नमस्ते।
हमको देना साथ नमस्ते, 'विशद' झुकाते माथ नमस्ते।।5।।

दोहा- चौबीसों जिनराज पद, झुका रहे हम शीश।
यही भावना है 'विशद', मिले सदा आशीष।।

ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयी श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- भक्ति भाव के साथ, चौबीसों जिनराज की।
बने श्री का नाथ, जो नित प्रति पूजा करें।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

बीजाक्षर परमेष्ठी पूजन

स्थापना

ॐ आदिक बीजाक्षार अनुपम, रहे लोक में मंगलाचार।
उत्तम चार शरण भी जानो, करने वाले भवदधि पार।।
भव्य भावना से सब प्राणी, करते इनका उच्चारण।
विशद भाव से हृदय कमल में, करते हैं हम आह्वानन्।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते देवाधिदेव, सर्वयन्त्रमन्त्र सिद्धिकराय ह्रीं ह्रीं द्रीं द्रीं क्रों क्रों ॐ ॐ झं वं ह्वः पः हः हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ आ उ सा..नामधेयस्य..सर्वापमृत्युविनाशनं कुरु-करु। मृत्युञ्जययन्त्राधिपतिः ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ नमोऽर्हते.... अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ नमोऽर्हते....अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छंद)

हम कर्म कलंक नशाएँ, प्रभु मुक्ती पद प्रगटाएँ।
हम जिनवर के गुण गाते, यह निर्मल नीर चढ़ाते।।1।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संताप नाश हो जाए, सदियों से हमें सताए।
चन्दन यह श्रेष्ठ घिसाए, हम यहाँ चढ़ाने लाए।।2।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत लाए शुभकारी, जो पाप प्रणाशन कारी।
हम यहाँ चढ़ाते स्वामी, बन जाएँ प्रभु शिवगामी।।3।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम के मारे-मारे, निज शक्ती से भी हारे।
यह सुरभित सुमन चढ़ाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।4।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा से बहुत सताए, ना तृप्ति कभी भी पाए।
अब क्षुधा रोग नश जाए, नैवेद्य चढ़ाने लाए।।5।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मोह बली ने स्वामी, भटकाया हे शिवगामी।
हम विशद ज्ञान प्रगटाएँ, अब पावन दीप जलाएँ।।6।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमको यह कर्म सताते, जो निज स्वभाव विसराते।
पावन यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।।7।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कर्म शुभाशुभ गाए, फल उनका प्राणी पाए।
फल चढ़ा रहे शुभकारी, शिवफल की आई बारी।।8।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम तीनों लोक भ्रमाए, ना पद अनर्घ्य शुभ पाए।
अब अर्घ्य चढ़ा हे स्वामी, बन जाएँ हम शिवगामी।।9।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रासुक लेकर नीर यह, देते शांतीधार।
वन्दन करते तव चरण, करो प्रभू उद्धार।। शान्तये शांतिधारा

दोहा– लाए हैं उद्यान से, चुनकर सुरभित फूल।
पुष्पाञ्जलि करते 'विशद', पाने भव का कूल।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्घावली

दोहा– बीजाक्षर परमेष्ठि हैं, मंगल उत्तम चार।
चार शरण पाएँ प्रभो !, पाने भवदधि पार।।

मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(चौपाई)

ॐकार बीजाक्षर भाई, परमेष्ठी वाचक सुखदायी।
हम भी जिसका ध्यान लगाएँ, मृत्युंजय पदवी शुभ पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं ॐ बीजाक्षर शक्ति समन्वित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह्रीं बीजाक्षर हैं मनहारी, तीर्थंकर की महिमाकारी।
हम भी जिसका ध्यान लगाएँ, मृत्युंजय पदवी शुभ पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं ह्रीं बीजाक्षर शक्ति समन्वित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीं बीजाक्षर पावन गाया, लक्ष्मी का द्योतक कहलाया।
भाव सहित हम जिसको ध्यायें, मृत्युंजय पदवी शुभ पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं बीजाक्षर शक्ति समन्वित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हं विश्व पूज्य पद गाया, शक्ती का द्योतक बतलाया।
भाव सहित हम जिसको ध्यायें, मृत्युंजय पदवी शुभ पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं बीजाक्षर शक्ति समन्वित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्लीं बीजाक्षर महिमाकारी, शत्रू रोधक है शुभकारी।
भाव सहित हम जिसको ध्यायें, मृत्युंजय पदवी शुभ पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं क्लीं बीजाक्षर शक्ति समन्वित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीजाक्षर ब्लूं सुखदायी, ऋद्धि सिद्धि विज्ञान प्रदायी।
भाव सहित हम जिसको ध्यायें, मृत्युंजय पदवी शुभ पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं ब्लूं बीजाक्षर शक्ति समन्वित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रों बीजाक्षर अनुपम जानो, जो आरोग्य प्रदायिक मानो।
भाव सहित हम जिसको ध्यायें, मृत्युंजय पदवी शुभ पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं क्रों बीजाक्षर शक्ति समन्वित मृत्युंजयी देवेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

हे जिनेन्द्र! तुमने अनादि की, भव सन्तति का नाश किया।
अर्हत् पदवी को पाकर के, केवलज्ञान प्रकाश किया।।
चरण कमल में प्रभो! आपके, भाव सहित करते अर्चन।
मोक्षमार्ग के परम प्रकाशक, करते हम शत् शत् वन्दन।।8।।

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टय समवशरण लक्ष्मी विभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, भाव कर्म का किए विनाश।
चित् चैतन्य स्वरूप निरत हो, निज स्वभाव में कीन्हे वास।।
जिन त्रैकालिक सिद्ध प्रभु को, भाव सहित करते अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म काष्ठगणं भस्मीकुर्वर्त सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चाचार परायण हैं जो, शिक्षा–दीक्षा के दाता।
सप्त तत्त्व छह द्रव्य धर्म अरु, नय प्रमाण के हैं ज्ञाता।।
जैनाचार्य लोक में पूजित, का हम करते हैं अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।10।।

ॐ ह्रीं पञ्चाचार परायणाचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य अर्थ श्रुत तत्त्व बोध के, ज्ञाता मुनिवर लोक महान्।
अध्ययन अध्यापन में रत जो, उपाध्याय सद्गुण की खान।।
द्वादशांग श्रुत को करते हैं, भाव सहित हम भी अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।11।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगपठन पाठनोद्यतायोपाध्याय परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मरूप पर्वत के भेत्ता, द्वय प्रकार तप के धारी।
शैय्याशन जिनकी विविक्त है, निर्विकार हैं अविकारी।।
रत्नत्रय रत सर्व साधु का, भाव सहित करते अर्चन।
चरण कमल में विशद भाव से, करते हैं शत् शत् वन्दन।।12।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश प्रकार चारित्राराधक साधु परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

सुरनर विद्याधर से पूजित, अर्हत् मंगल गाये।
जल फल आदिक अष्ट द्रव्य ले, हम पूजा को आये।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।13।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर अर्हन्मंगलार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

ध्रौव्योत्पाद विनाश रूप जो, अखिल वस्तु को जाने।
परम सिद्ध परमेष्ठी को, हम मंगलमय पहिचाने।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।14।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर सिद्धमंगलायार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

सद्दर्शन कृत वैभव पाए, सर्व साधु अविकारी।
रोग उपद्रव मृग मृगेन्द्र सम, दूर भागते भारी।।

मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।15।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर साधुमंगलायार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी द्वारा भव शत, जैन धर्म को जानो।
सर्व लोक में मंगलमय सु, मंगलकारी मानो।।
मंगलमय जीवन हो मेरा, विशद भावना भाते।
तीन योग से चरण कमल में, सादर शीष झुकाते।।16।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर केवलिप्रज्ञप्त धर्मायार्घं निर्वापामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

लोकोत्तम जिनराज पदाम्बुज, की सेवा है सुखकारी।
ऋद्धी सिद्धि प्रदायक उत्तम, दोषों की नाशनहारी।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर अर्हल्लोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वदोष से च्युत होकर के, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास।
सिद्ध लोक में उत्तम हैं जो, करते लोकालोक प्रकाश।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।18।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर सिद्धलोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्रादि से, अर्चित संयम तपधारी।
सर्वसाधु लोकोत्तम जग में, सर्व जगत् मंगलकारी।।
जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।19।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर साधुलोकोत्तमायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

राग–द्वेष आदि पिशाच का, जिससे होता है मर्दन।
परम केवली कथित धर्म की, भाव सहित करते पूजन।।

जल फल आदि अष्ट द्रव्य ले, भाव सहित करते अर्चन।
अर्हत् गुण भागी बन जाऊँ, करता मैं शत् शत् वन्दन।।20।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर केवलि प्रज्ञप्तधर्मायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्तों की शरण लोक में, अर्चनीय जिन श्रेष्ठ कही।
भव भयहारी अष्ट कर्म की, नाशन हारी पूर्ण रही।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से है अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।21।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर अर्हत शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अव्याबाध आदि गुणधारी, चिदानन्द हैं अमृत रूप।
शरण प्राप्त हो सिद्ध प्रभु की, जो पा जाते आत्म स्वरूप।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से है अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर सिद्ध शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सर्व प्रयोजन तजकर, सर्व साधु की मिले शरण।
सर्व चराचर द्रव्य छोड़कर, वीतरागता करूँ वरण।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से है अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।23।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर साधु शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम केवली के मुखोद्गत, धर्म जीव का हितकारी।
जैन धर्म की शरण प्राप्त हो, सर्व जगत् मंगलकारी।।
अष्ट कर्म हों शांत हमारे, अष्ट द्रव्य से है अर्चन।
पञ्च प्रभु की शरण प्राप्त हो, करते हम शत् शत् वन्दन।।24।।

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न शांतिकर केवलि प्रज्ञप्त धर्म शरणायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेष्ठी मंगल हैं उत्तम, चार शरण सुखकारी।
भवि जीवों के लिए अनादि, होते मंगलकारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि-सप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– परमेष्ठी जिन पञ्च हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार हैं भक्ति के, परम पूज्य आधार।।

(छन्द चौपाई)

विघ्न विनाशी आप कहाए, नर सुर के स्वामी कहलाए।
अग्रेसर जिनवर को जानो, इष्ट सभी जीवों को मानो।।
अनाद्यनन्त कहा जो भाई, जग में फैली है प्रभुताई।
मम विघ्नों का वारण कीजे, विनती मेरी यह सुन लीजे।।
मुनियों के आधीश कहाए, गणाधीश इस जग में गाए।
स्तुति जिनकी मंगलकारी, सब विघ्नों की नाशनहारी।।
शांति प्रदायक जग में भाई, जिनवर की स्तुति अधिकाई।
कलुषित कली काल के प्राणी, मिथ्यावादी हैं अति मानी।।
भव्य जीव सद्दर्शन पावें, ज्ञान सुधारस सम हो जावें।
पाप पुञ्ज नश जाए सारा, जीवन मंगलमय हो प्यारा।।
यही मान्य गणराज कहाए, जिनकी भक्ती शान्ति दिलाए।
विनय आपकी जो भी धारें, वह सब दोषों को परिहारे।।
नाम आपका जो भी ध्यावें, श्रेष्ठ गुणों को वह पा जावें।
इष्ट सिद्धि हो जावे भाई, यह जिन भक्ति की प्रभुताई।।
जय-जय हो जिनराज तुम्हारी, सर्व गुणों के तुम अधिकारी।
महिमा यहाँ आपकी गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
सुर-गुरु कोटि वर्ष तक गावें, तो भी पूर्ण नहीं कह पावें।
'विशद' अल्प बुद्धि के धारी, वह गुण क्या तुमरे कह पावें।।

सोरठा– तुम हो सर्व महान्, हम दोषों के कोष हैं।
किया अल्प गुणगान, अल्पबुद्धि से आपका।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदश मन्त्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– बुद्धि अनाकुल होय, धर्म प्रीति जागे परम।
मोक्ष प्राप्त हो सोय, जैन धर्म को धारकर।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

मूल बीजाक्षर पूजन

स्थापना

गंगा का शीतल निर्मल जल, करता है भव ताप हरण।
करके शुभ अभिषेक यंत्र का, मृत्युञ्जय हो श्रेष्ठ वरण।।
जल गंधाक्षत पुष्प चरूवर, दीप धूप फल आदिक सार।
मृत्युञ्जय हो प्राप्त हमें शुभ, जैनधर्म आगम अनुसार।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते देवाधिदेव, सर्वयन्त्रमन्त्र सिद्धिकराय ह्रीं ह्रीं द्रीं द्रीं क्रों क्रों ॐ ॐ झं वं ह्वः पः हः हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ आ उ सा..नामधेयस्य..सर्वापमृत्युविनाशनं कुरु–करु। मृत्युञ्जययन्त्राधिपतिः ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ नमोऽर्हते.... अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ नमोऽर्हते....अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

हम लीन हुए जग विषयों में, मद मस्त रहे खुद को भूले।
भव सागर में भटकाए हैं, बहु राग–द्वेष करके फूले।।
अब आत्म सुधारस पीने को, यह निर्मल जल भर लाए हैं।
हम मृत्युञ्जय की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।1।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार बढ़ाया है हमने, चेतन को किया स्वयं काला।
बढ़ रही कषायों की अग्नी, निज का अस्तित्व मिटा डाला।।
संताप मिटाने भव–भव का, यह चन्दन घिसकर लाए हैं।
हम मृत्युञ्जय की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।2।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भव समुद्र के पार हेतु, रत्नत्रय है पावन नौका।
अक्षय अखण्ड शिवपद पाने, का मिला हमें यह शुभ मौका।।
शुभ पद पाने अक्षय अनुपम, यह अक्षत श्रेष्ठ धुवाए हैं।
हम मृत्युञ्जय की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।3।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह वारुणी पीकर के, मतवाले होकर घूमें हैं।
भोगों की इच्छा करके कई, दुःखों के हेतू चूमें हैं।।
अब कामबाण विध्वंस हेतु, मनसिज चरणों में लाए हैं।
हम मृत्युञ्जय की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।4।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मोहक व्यंजन खाकर के, इस तन की भूख मिटाई है।
कुछ क्षण को शांत हुई लेकिन, वह फिर–फिर उदय में आई है।।
हम क्षुधा रोग के शमन हेतु, नैवेद्य सरस यह लाए हैं।
हम मृत्युञ्जय की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।5।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार में भ्रमित हुए, भव–भव में दुख भरपूर सहे।
हम राग–द्वेष की धूप छाँव, से व्याकुल हो चकचूर रहे।।
हम मोह महातम के नाशक, यह दीप सजाकर लाए हैं।
हम मृत्युञ्जय की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।6।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख की ज्वाला से त्रस्त विशद, अवनीतल दिखता सारा है।
बेहोश पड़े संसारी जन, न दिखता कहीं सहारा है।
हो कर्म पुंज का नाश धूप, अतएव जलाने लाए हैं।
हम मृत्युञ्जय की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।7।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसको निज कहकर अपनाते, वह स्वार्थ पूर्ण कर चल देते।
जब हमको ठुकराते अपने, तब खेद स्वयं ही कर लेते।।
अब मोक्ष सुफल पाने हेतू, यह मोक्ष महाफल लाए हैं।
हम मृत्युञ्जय की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।8।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्प मिला, नैवेद्य दीप यह धूप अहा।
ले फल यह आठों द्रव्यों का, वर अर्घ्य श्रेष्ठ शुभकार रहा।।
हम पद अनर्घ पाने अनुपम, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
हम मृत्युञ्जय की पूजा कर, सौभाग्य जगाने आए हैं।।9।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतर भूत शाकिनी डाकिन, किन्नरादि ग्रह पन्नग देव।
हो उत्पात किसी के द्वारा, शाश्वत शांत करो तुम एव।। *(शांतये शांतिधारा)*

यंत्रराज की पूजा करके, व्याधि भीति विष का हो नाश।
तुष्टि पुष्टि बल आयु विभूति, सुख-शांती का होय विकाश।।

(दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा- मृत्युञ्जय वर्णादि है, जग में मंगलकार।
जयमाला गाते यहाँ, हम भी अपरम्पार।।

(मुक्तक छंद)

अरे बन्धुओ ! अर्हंतों ने, सच्चा पथ दिखलाया है।
जिओ और जीने दो सबको, विशद पाठ सिखलाया है।।
मिथ्यातम को भेद ज्ञान से, जिनने पूर्ण हटाया है।
सम्यक् ज्योति जगाकर उर में, श्रद्धा गुण प्रगटाया है।।1।।

निज आतम का ध्यान लगाकर, घाती कर्म नशाते हैं।
गुण अनन्त के धारी अर्हत्, विशद ज्ञान प्रगटाते हैं।।
धन कुबेर तब समवशरण की, रचना करने आता है।
सब इन्द्रों के साथ में खुश हो, जय-जयकार लगाता है।।2।।

धर्मचक्र सर्वाण्ह यक्ष ले, आगे-आगे चलता है।
सहस रश्मि सम आभा वाला, मानो दीपक जलता है।।

सर्व पाप का नाशनहारी, मंगलमय कहलाता है।
पुण्य रूप जो अतिशयकारी, धर्म ध्वज फहराता है।।3।।

जिसे देखकर के सब प्राणी, विनय सहित झुक जाते हैं।
श्रावक जन हाथों में लेकर पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।।
समवशरण में दिव्य देशना, जिनकी पावन होती है।
मूरख से मूरख अज्ञानी, की जो जड़ता खोती है।।4।।

जिसमें सत्य अहिंसा निस्पृह, अनेकांत बतलाया है।
स्याद्वाद की शैली का शुभ, अनुपम राज सिखाया है।।
जहाँ विकारी भाव और जिन, पक्षपात का नाम नहीं।
राग-द्वेष या मोह मान का, किन्चित् होता काम नहीं।।5।।

इन्द्रिय सुख या विषय भोग की, जहाँ दीखती आश नहीं।
वहाँ अतिन्द्रिय आत्मिक सुख का, होता विशद प्रकाश सही।।
रत्नत्रय अरु सप्त तत्त्व का, जिनके द्वारा कथन किया।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतु, भेद ज्ञान से मथन किया।।6।।

महापुरुष जो मुक्ती पाए, आगे जो भी पाएँगे।
रत्नत्रय को पाकर अपना, जीवन सफल बनाएँगे।।
जिसके आगे पद सब फीके, अर्हन्तों का पद सच्चा।
पूर्ण विश्व में श्रेय प्रदायक, जाने हर बच्चा-बच्चा।।7।।

(घत्ता : छंद)

जय-जय अरहन्ता, शिव तियकन्ता, भव भय हंता सुखकारी।
छियालिस गुणवन्ता, पूजें संता, सौख्य अनन्ता दुखहारी।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रसहित समवशरणस्थित धर्मचक्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीर्थंकर पद प्राप्त कर, पहुँचे शिवपुर धाम।
उनका पद पाने 'विशद', बारम्बार प्रणाम।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ प्रत्येक पूजा 'अ वर्ण'

सोरठा– 'अ' वर्णादिक पूर्ण, बीजाक्षर अनुक्रम लिए।
महामंत्र परिपूर्ण, जल गंधादि से पूजते।।

अवर्णादि बीजाक्षर प्रत्येक पूजा प्रतिज्ञापनार्थं पुष्पाक्षतान् क्षिपेत्

'अ' वर्ण पूजा

स्थापना

जटा मुकुटधारी द्विज कुल में, जो उद्भूत पुरुषवत् ज्ञान।
चतुरानन जो है सुगंध युत, कनक कुण्डलोल्लसित महान्।।
एक लाख योजन तक विकसित, कूर्माङ्ग है जिसकी पहचान।
सकल अचिन्त्य सिद्धिदायक हम, भजें 'अ' वर्ण गुणों की खान।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्ण ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्ण ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्ण ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सुन्दरी छन्द

कलश जल से भर के लाए हैं, जन्मादि रोग नशाने आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ती के भाव बनाए हैं।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर से गंध बनाए हैं, भव ताप नशाने को हम आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ती के भाव बनाए हैं।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सु अक्षय श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं, सुपद अक्षय को पाने आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ती के भाव बनाए हैं।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प यह रंग-बिरंगे लाए हैं, काम का रोग नशाने आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ती के भाव बनाए हैं।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस चरु यह श्रेष्ठ बनाए हैं, क्षुधा का रोग नशाने आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ती के भाव बनाए हैं।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर के दीप जलाए हैं, मोह अंध के नाश हेतु आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ती के भाव बनाए हैं।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेने अग्नि में लाए हैं, कर्म नाश करने हम आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ती के भाव बनाए हैं।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं, मोक्ष महाफल पाने आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ती के भाव बनाए हैं।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य से यह अर्घ्य बनाए हैं, पद अनर्घ पाने हम आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ती के भाव बनाए हैं।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शस्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'अ' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतू सारे, करने पाप विनाश।
नीरादिक वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– आह्वानादिक कर्मकर, पावें श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महामेरुसदृश...अवर्ण...नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

'ध' वर्ण पूजा

स्थापना

विद्रुमभूषित अंग चतुर्भुज, गुग्गुल गंध हेम के साथ।
कृष्णानन त्रिलोचनधारी, वश्य हनी कहलाए साथ।।
अर्चनीय है हेम प्रभामय, वर्ण 'ध' कार गुणों की खान।
कहा भूत हर सिद्धि प्रदायक, करने वाला जो कल्याण।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्ण ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्ण ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्ण ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सोरठा

देते जल की धार, जन्म-जरादिक नाश हो।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

लाए चंदन गार, भव आताप विनाश हो।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत लिए निखार, अक्षय पद हमको मिले।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प लिए शुभकार, कामबाण का नाश हो।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्पित चरु मनहार, क्षुधा नशाने के लिए।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जला शिवकार, मोह नाश को लाए हैं।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगन्ध अपार, कर्म नाश को खेवते।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल लाए रसदार, मोक्ष महापद के लिए।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

लेके अर्घ्य सम्हार, पद अनर्घ के हेतु हम।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शस्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'ध' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतू करने, सारे पाप विनाश।
नीरादिक वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **आह्वानादिक कर्मकर, पावें श्रेय महान्।**
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महामेरुसदृश...धवर्ण...नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

'ठ' वर्ण पूजा

स्थापना

शशि शिखा उज्ज्वल किरीटमय, चूड़ामणि शत योजनवान।
विप्र प्रियम्बक उग्र गंधयुत, मिनस केतु रक्तांबर जान।।
श्वेत अंग पाशाङ्कुश आयुध, गगन मयूर है पुरुषाकार।
भवभीति सब विघ्न विनाशक, दक्ष रहा शुभ वर्ण 'ठ' कार।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रें हीं शशिधरवर्ण शशिचूड़ामणि किरीटालंकृत ठ वर्ण ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों हीं शशिधरवर्ण शशिचूड़ामणि किरीटालंकृत ठ वर्ण ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों हीं शशिधरवर्ण शशिचूड़ामणि किरीटालंकृत ठ वर्ण ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(भुजंग प्रयात)

यमुना नदी से जल निर्मल भराए, जन्मादि रोगों के नाशन को आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।1।।
ॐ आं क्रों हीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर में चन्दन घिसाकर के लाए, भव ताप का नाश करने हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।2।।
ॐ आं क्रों हीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ये अक्षय हमने धुवाए, अक्षय सुपद पाने हेतू हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।3।।
ॐ आं क्रों हीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

थाली में सुन्दर सुमन भरके लाए, रतिदोष को नाश करने हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।4।।
ॐ आं क्रों हीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य रसदार हमने बनाए, क्षुधारोग के नाश हेतू हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।5।।
ॐ आं क्रों हीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के दीपक शुभ हमने जलाए, मोहान्ध का नाश करने हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।6।।
ॐ आं क्रों हीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप यह खेने को लाए, आठों करम नाश करने हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।7।।
ॐ आं क्रों हीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे सरस फल चढ़ाने को लाए, महामोक्षफल प्राप्त करने हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।8।।
ॐ आं क्रों हीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य आठों हमने ये पावन मिलाए, पाने अनर्घ पद हम भी तो आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।9।।
ॐ आं क्रों हीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शस्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'ठ' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतू सारे, करने पाप विनाश।
नीरादिक वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों हीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादी कर्मकर, पावें श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों हीं शशिधरवर्ण मयूरस्थित ठवर्ण द्वितीयस्थानस्थित ठ बीज.. नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तये शान्तिधारा।।

'ह' वर्ण पूजा

स्थापना

सर्वाभरण विभूषित अनुपम, जो प्रसन्न हृदयी सुखकार।
कहा गया स्तम्भस्तोदक्षत, अर्चनीय है वर्ण 'ह' कार।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्ण ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्ण ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्ण ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं (चाल छंद)

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चन्दन श्रेष्ठ घिसाएँ, भव का संताप नशाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षत श्रेष्ठ चढ़ाएँ, शुभ अक्षय पद हम पाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम सुरभित पुष्प चढ़ाएँ, रतिदोष से मुक्ती पाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस बनवाएँ, अपनी हम क्षुधा नशाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम घृत के दीप जलाएँ, सब मोह-तिमिर विनशाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, आठों ही कर्म नशाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सुन्दर सरस चढ़ाएँ, फिर मोक्ष महाफल पाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अनुपम अर्घ्य बनाएँ, शुभ पद अनर्घ्य पा जाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शस्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'ह' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतू सारे, करने पाप विनाश।
नीरादिक वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

आह्वानादिक कर्मकर, पावें श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह बीज..... नामधेयस्य.....सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

'क्ष' वर्ण पूजा

स्थापना

गदा शंख खेटाब्ज बाण हल, खड्ग चक्रमूसल त्रिशूल।
शक्त्यांकुश कोदण्ड पासकर, विपुल वज्र षोडश भुज मूल।।
भानु तेज झट मुकुट किरीटयुत, हेम अंग वनतेयारूढ़।
त्रिभुवन निलय राजान्वय स्थित, पूज्य वर्ण 'क्ष' बीज है गूढ़।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण गरुडपृष्ठाधिष्ठित षोडश भुजालंकृत क्ष बीज ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण गरुडपृष्ठाधिष्ठित षोडश भुजालंकृत क्ष बीज ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण गरुडपृष्ठाधिष्ठित षोडश भुजालंकृत क्ष बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चौपाई

प्रासुक निर्मल नीर भराए, नाश हेतु जन्मादिक आए।
भक्ती जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित चन्दन लाए, भव आताप नशाने आए।
भक्ती जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर अक्षय अक्षत लाए, अक्षय पद पाने हम आए।
भक्ती जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मनहर पुष्प चढ़ाने लाए, काम नाश करने हम आए।
भक्ती जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस नैवेद्य बनाए, क्षुधा नशाने को हम आए।
भक्ती जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतमय मनहर दीप जलाए, मोह नशाने को हम आए।
भक्ती जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में खेने लाए, आठों कर्म नशाने आए।
भक्ती जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल के थाल भराए, मोक्ष महाफल पाने आए।
भक्ती जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य से अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने को आए।
भक्ती जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शस्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'ध' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतू सारे, करने पाप विनाश।
नीरादिक वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादिक कर्मकर, पावें श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण षोडशभुजालंकृत क्ष बीज..... नामधेयस्य... सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तये शान्तिधारा।।

अथ सकल स्वर पूजा

स्थापना

जो कुदोदभहि हैं स्थानगत, अनुपम शांत रहे मनहार।
शंख चंद सम शांत वर्ण सब, सर्वलोक में मंगलकार।।
दुष्ट ग्रहों के उच्चाटन में, बीज वर्ण हैं कुशल महान्।
सकल स्वरों का स्थापन कर, करते हैं उर में आह्वान।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर ने, कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वर ! अत्र एहि–एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वर ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वर ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सुखमा छन्द

निर्मल जल से पूज रचाएँ, जन्म–जरादि रोग नशाएँ।
भक्ती में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन जल के साथ मिलाए, भव आताप नाश हो जाए।
भक्ती में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यहाँ चढ़ाने लाए, अक्षय पद हमको मिल जाए।
भक्ती में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति–भाँति फूल मँगाए, काम दोष मेरा नश जाए।
भक्ती में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के शुभ नैवेद्य बनाए, क्षुधा नशाने हम भी आए।
भक्ती में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के जगमग दीप जलाए, मोह–तिमिर नाशी कहलाए।
भक्ती में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में खेने लाए, कर्मों से मुक्ती मिल जाए।
भक्ती में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदिक थाल भराए, मोक्ष महापद पाने आए।
भक्ती में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
भक्ती में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

सर्व कर्म व्याधी विनाश में, जो समर्थ जानो।
सब भूतारी के नाशक स्वर, नमूँ श्रेष्ठ मानो।।
विघ्न निवारण हेतू सारे, करने पाप विनाश।
नीरादी वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

आह्वानादी कर्मकर, पावें श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी–डाकिनी–भूत–व्यन्तर–पिशाच–राक्षस–ग्रहयूथच्छेदन–भेदन–ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वर...नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

अथ ॐकार पूजा

स्थापना

पद्म सुगंधित पर पद्मासन, श्रेष्ठ वर्ण परमात्म स्वरूप।
कोटी सूर्य चन्द्र सम उज्ज्वल, शोभित होता जिसका रूप।।
स्व अभीष्ट फल सिद्धीदायक, प्रणव बीज है शुभ ॐकार।
अर्चा करते भक्ति भाव से, हृदय सजाते बारम्बार।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर ने, कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पंचवर्णान्वित ॐकार बीज ! अत्र एहि–एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं पंचवर्णान्वित ॐकार बीज ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं पंचवर्णान्वित ॐकार बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द–मोतिया दाम)

भराया हमने निर्मल नीर, मिटे जन्मादि जरा की पीर।
करे जो भक्ती से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिलाकर केसर लाए नीर, मिटाने को भव–भव पीर।
करे जो भक्ती से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुवाए अक्षत यहाँ महान्, प्राप्त अक्षय पद हो भगवान।
करे जो भक्ती से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित चढ़ा रहे हम फूल, काम हो मेरा भी निर्मूल।
करे जो भक्ती से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस नैवेद्य बनाए खास, क्षुधा हो मेरी पूर्ण विनाश।
करे जो भक्ती से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमय लाए दीप प्रजाल, नशे मम पूर्ण मोह का जाल।
करे जो भक्ती से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाते अग्नी में हम धूप, कर्म नश पाने जिन स्वरूप।
करे जो भक्ती से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल लाए यहाँ महान्, मोक्षपद पाने को निर्वाण।
करे जो भक्ती से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाया सब द्रव्यों से अर्घ्य, चढ़ाके पाएँ सुपद अनर्घ्य।
करे जो भक्ती से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण ।।9 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

(शम्भू छंद)

नीर सुगंधित गंध सु सुरभित, श्वेताक्षत शुभ पुष्प प्रधान।
चरू श्रेष्ठ ले दीप निकर शुभ, धूप और फल अर्घ्य महान् ।।
शुभ्र सु उज्ज्वल शुभ देहामृत, त्रैलोकेश्वर शांत अपार।
पञ्च ब्रह्ममय सर्व पवन शुभ, का आराधक अपरम्पार ।।
ॐ बीज सुख सार्ध सिद्ध शुभ, अर्हत् कथिताक्षर शुभ मंत्र।
पूर्णकाम स्वर नमूँ काम हर, मुनि गणधरयुत ध्येय सुयंत्र ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- आह्वानादी कर्मकर, पावें श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकार.... नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

'क्षी' बीज वर्ण पूजा

स्थापना

सुर गंधर्व यक्ष अरु राक्षस, ब्रह्म सुराक्षस आदिक देव।
क्षितिमण्डल के मध्य श्रेष्ठ 'क्षी,' बीज वर्ण है पूज्य सदैव।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर ने, कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीज ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीज ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शेर छन्द

प्रासुक शुभ नीर से त्रय धार कराएँ, हम जन्मादि रोगों से मुक्ती पाएँ।
जागे सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ ।।1 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर को चंदन के संग घिसाएँ, भवाताप नाश कर हम मुक्ती पाएँ।
जागे सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ ।।2 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल के स्वच्छ अनुपम थाल भराएँ, अक्षय सुपद को पाएँ न जग में भ्रमाएँ।
जागे सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ ।।3 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित सुगन्धित शुभ पुष्प मँगाएँ, कामरोग अपना हम भी तो नशाएँ।
जागे सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ ।।4 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम नैवेद्य के शुभ थाल भराएँ, क्षुधा रोग नाश करके मुक्ती पाएँ।
जागे सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ ।।5 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय कपूर के शुभ दीप जलाएँ, मोह महाअंध नाश शिवपद पाएँ।
जागे सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ ।।6 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध युक्त धूप खेने लाए, कर्म नाश करने के भाव बनाए।
जागे सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ ।।7 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस फल के शुभ थाल भराए, मोक्ष महाफल हम भी पाने आए।
जागे सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ ।।8 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य से हमने अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने के भाव जगाए।
जागे सौभाग्य सुख–शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शस्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'क्षी' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतू सारे, करने पाप विनाश।
नीरादी वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– आह्वानादी कर्मकर, पावें श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीज..... नामधेयस्य.... सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

अथ 'ल' बीज वर्ण पूजा

स्थापना

कृष्ण दक्ष सभाद्य कहा है, शुभ सल्लक्ष योजनादर्घ्य।
क्षिति मण्डल कोंणस्थ बीज 'ल', को पूजें हम देने अर्घ्य।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर ने, कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत का, उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीज ! अत्र एहि–एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीज ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत्त ल बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सखी छन्द

जल की भर लाए झारी, त्रय रोग नशावन कारी।
हम भक्ती में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाएँ, भव का संताप नशाएँ।
हम भक्ती में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अक्षय अक्षत लाए, अक्षय पद पाने आए।
हम भक्ती में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह सुरभित पुष्प मँगाए, रति दोष नशाने आए।
हम भक्ती में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस बनवाए, हम क्षुधा नशाने आए।
हम भक्ती में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मंगल दीप जलाए, अब मोह नशाने आए।
हम भक्ती में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पावन धूप जलाएँ, अब आठों कर्म नशाएँ।
हम भक्ती में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे सरस मँगाएँ, हम मोक्ष महाफल पाएँ।
हम भक्ती में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अनुपम अर्घ्य चढ़ाएँ, फिर पद अनर्घ्य पा जाएँ।
हम भक्ती में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शस्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'ल' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतू सारे, करने पाप विनाश।
नीरादी वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– आह्वानादी कर्मकर, पावें श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महामेरुसदृश ल वर्ण..... नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

अथ 'व' बीज वर्ण पूजा

स्थापना

कलायुक्त कोमल काय कांती, अंग विभूषित शक्तीवान।
अर्चनीय द्विअष्ट पत्र 'व', कर्मानन्तपती गुणवान।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत का, उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीज ! अत्र एहि–एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीज ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोड्शकलायुक्त वकार बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पद्धडी छंद)

जल की हम देते तीन धार, अब जन्मादी से मिले पार।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन अर्पित करते सुवास, अब भवाताप का हो विनाश।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत लाए महान्, पद प्राप्त होय अक्षय महान्।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ाते हैं महान्, हो रतीदोष की पूर्ण हान।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाते यह विशेष, मम क्षुधा नाश होवे अशेष।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का शुभ दीपक ले प्रजाल, अब कटे मोह का पूर्ण जाल।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप हुतासन में महान्, खेते करने को कर्म हान।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चढ़ा रहे फल यहाँ आज, अब मोक्ष महल का मिले ताज।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अब चढ़ा रहे हैं यहाँ अर्घ्य, हो प्राप्त मुझे भी पद अनर्घ्य।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

सर्वाभरण विभूषित अनुपम, जो प्रसन्न हृदयी सुखकार।
सर्व विघ्न शांती कारक 'व', पूज्यनीय है मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाके, पूजा करते हम शुभकार।
यही भावना लेकर आये, पाएँ हम भवदधि से पार।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– आह्वानादी कर्मकर, पावें श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीज...नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तये शान्तिधारा।।

अथ 'र' बीज वर्ण पूजा

स्थापना

कलायुक्त कोमल काय कांति, अंग विभूषित शक्तीवान।
अर्चनीय द्विअष्ट पत्र 'र', कर्मानन्तपती गुण खान।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत का, उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीज ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीज ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अडिल्य छंद (तर्ज : दूल्हे का सेहरा...)

निर्मल जल प्रासुक करके हम लाए हैं, जन्म-जरादि रोग नशाने को आए हैं।
जीत के मृत्यु पद मृत्युञ्जय पाए हैं, हम भी वह पद पाएँ भाव बनाए हैं।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन में केसर घिसकर के लाए हैं, भवाताप नशाने को हम भी आए हैं।
जीत के मृत्यु पद मृत्युञ्जय पाए हैं, हम भी वह पद पाएँ भाव बनाए हैं।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक जल से अक्षत श्रेष्ठ धुवाए हैं, अक्षय पद पाने को यहाँ चढ़ाएँ हैं।
जीत के मृत्यु पद मृत्युञ्जय पाए हैं, हम भी वह पद पाएँ भाव बनाए हैं।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रंग-बिरंगे पुष्प रंगा कर लाए हैं, काम रोग को यहाँ नशाने आए हैं।
जीत के मृत्यु पद मृत्युञ्जय पाए हैं, हम भी वह पद पाएँ भाव बनाए हैं।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घी-बूरा से यह नैवेद्य बनाए हैं, क्षुधा नशाने आज यहाँ हम आए हैं।
जीत के मृत्यु पद मृत्युञ्जय पाए हैं, हम भी वह पद पाएँ भाव बनाए हैं।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घी के दीपक हमने यहाँ जलाएँ हैं, मोह-तिमिर के नाश हेतु यह लाए हैं।
जीत के मृत्यु पद मृत्युञ्जय पाए हैं, हम भी वह पद पाएँ भाव बनाए हैं।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेने को यह धूप अग्नी में लाए हैं, अष्ट कर्म के नाश हेतु हम आए हैं।
जीत के मृत्यु पद मृत्युञ्जय पाए हैं, हम भी वह पद पाएँ भाव बनाए हैं।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति-भाँति के फल से थाल भराए हैं, मोक्ष महाफल पाने यहाँ चढ़ाएँ हैं।
जीत के मृत्यु पद मृत्युञ्जय पाए हैं, हम भी वह पद पाएँ भाव बनाए हैं।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य से अर्घ्य बनाकर लाए हैं, पद अनर्घ्य पाने जिनपद में आए हैं।
जीत के मृत्यु पद मृत्युञ्जय पाए हैं, हम भी वह पद पाएँ भाव बनाए हैं।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

सर्वाभरण विभूषित अनुपम, जो प्रसन्न हृदयी सुखकार।
सर्व विघ्न शांती कारक 'र' पूज्यनीय है मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाके, पूजा करते हम शुभकार।
यही भावना लेकर आये, पाएँ हम भवदधि से पार।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– आह्वानादी कर्मकर, पावें श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीज............ नामधेयस्य.............सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा। *।। शान्तये शान्तिधारा।।*

अथ 'फ' बीज वर्ण पूजा

स्थापना

कलायुक्त कोमल काय कांति, अंग विभूषित शक्तिवान।
अर्चनीय द्विअष्ट पत्र 'फ', कर्मानन्तपति गुणखान।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीज ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीज ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सृग्विणी छन्द

नीर यह कूप का श्रेष्ठ भर लाए हैं, रोग त्रय नाश करने हम आए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।1।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध यह सुगन्धमय आज यहाँ लाए हैं, भवाताप नाश हेतु भाव से आए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।2।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ यह अक्षय अखण्ड शुभ लाए हैं, अक्षय पद पाने को आज यहाँ आए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।3।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प यह सुगन्धित अर्चना को लाए हैं, कामबाण नाश हेतु थाल में सजाए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।4।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ठ यह नैवेद्य शुभ सद्य ही बनाए हैं, क्षुधारोग नाश हेतु अर्चना को लाए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घी के शुभ दीप यह रत्नमय जलाएँ हैं, मोह ताप नाश हेतु आज यहाँ आए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।6।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंधयुक्त शुभ धूप ये जलाएँ हैं, अष्टकर्म नाश हेतु धूम शुभ उड़ाए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।7।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ठ फल श्रेष्ठ यह थाल में भराए हैं, महामोक्षफल प्राप्ति हेतु ये लाए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।8।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य को मिलाके अर्घ्य ये बनाए हैं, पद अनर्घ्य प्राप्ति हेतु आज यहाँ आए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।9।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

सर्वाभरण विभूषित अनुपम, जो प्रसन्न हृदयी सुखकार।
सर्व विघ्न शांती कारक 'फ' पूज्यनीय है मंगलकार।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

आह्वानादि कर्मकर, पावें श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीज.......... नामधेयस्य.............सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तये शान्तिधारा।।

जाप्य-ॐ ह्रीं अर्हं झं वं व्हः पः हः मम सर्वापमृत्युञ्जय कुरु-कुरु स्वाहा। *(लोंग या पुष्प से 108 बार जाप करें)*

समुच्चय जयमाला

दोहा– अष्ट द्रव्य के साथ में, दीपक लिया प्रजाल।
विशद मृत्युञ्जय की यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

छंद–तोटक

जय प्रथम जिनेश्वर आदि जिनं, जय महि परमेश्वर शीलधरं।
जय नमित सुरासुर सौख्य करं, जय जन्म–मरण दुख पूर्णहरं।।
जय महित् सदन के ईश परम, प्रभु पाए अपना लक्ष्य चरम।
प्रभु ने प्रगटाए मूलगुणं, फिर धारे द्वादश श्रेष्ठ गुणं।।1।।

जय चन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र जयं, जय–जय उपदेशक उभय नयं।
जय स्वर्ग से चयकर लिए जनम, जय सौ इन्द्रों के साथ गृहं।।
जय इन्द्र न्हवन कर मेरु गिरं, जय देह पाँच सौ धनुष परं।
जय लख चौरासी पूर्व परं, जग में कहलाए आयु धरं।।2।।

जय धर्म प्रवर्तन किए वरं, जय कर्मोपदेशक आप परं।
प्रभु जिन योगीश्वर हुए प्रथम, जय संयमधारी हैं उत्तम।।
जय सेवित व्यंतर नाग सुरं, जय नमित सुरासुर भानु परं।
जय–जय जगति पति क्लेश हरं, जय मनोकामना पूर्ण करं।।3।।

जय ज्ञान रूप जय धर्म रूप, जय चन्द्र वदन अकलंक रूप।
जय भव्य दयाकर भव्य हंस, जय प्रगटित शुभकर चारुवंश।।
जय ईश्वर गुण गण महतिमान, जय–जय श्रीपति जयश्रीवान।
जय पाप तिमिर हन चन्द्र रूप, जय दोष निवारक जिन अनूप।।4।।

जय मोक्षमार्ग के प्रथम ईश, तव पद में झुकते नराधीश।
जय गणधर यतिपति सेव्य पाद, जय शारद नीरद दिव्यनाद।।
जय जन–जन के दुःखहरणहार, हे पूर्ण ! दिगम्बर निराकार।
जय नित्य निरंजन अवनि पाल, जय नाशक हारे कर्म जाल।।5।।

जय–जय जिन स्वामी पूज्यपाद, तव शासन अतिशय निशावाद।
जय–जय हे जिनवर मूर्तिमान, तुमसे इस जग की रही शान।।
जय शरणागत के शरण रूप, तुम तीर्थ रहे अतिशय अनूप।
हम विशद जोड़कर दोय हाथ, नत वंदन करते चरण नाथ।।6।।

करके कर्मों का पूर्ण अन्त, तव पाये हो प्रभु गुणानंत।
तुम सिद्ध शिला के बने ईश, तव चरण झुकाते अतः शीश।।
मेरे मन में यह जगी आस, हो जन्म–मरण का पूर्ण नाश।
हम विनती करते बार–बार, हमको अब भव से करो पार।।7।।

घत्तानंद छंद

जय–जय जिनचंदं, आनंद कंदं, नाभिराय नृप के नंदं।
जय आदि जिनंदं, दोष निकंदं, चौबिस जिनवर पद वंद्यं।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते देवाधिदेवाय यन्त्रमन्त्रसिद्धिकराय ह्रीं ह्रीं द्रीं द्रीं क्रों क्रों ॐ ॐ झ्रौं वं पः हः हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा.... नामधेयस्य.... सर्वशान्तिं कुरु–कुरु। तुष्टिं कुरु–कुरु। सिद्धिं कुरु–कुरु। वृद्धिं कुरु–कुरु। समस्तक्षामडामरभयविनाशनं कुरु–कुरु सर्वशान्तिकराय रक्षापमृत्युञ्जयाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धीर वीर सम्यक् गुणधारी, अविनाशी अविचल अविकार।
अष्ट कर्म मल के नाशी जिन, काव्योद्भव सातों के हार।।
सार्ध विजय आदि के सुखकर, निर्मलतम जिनश्री के धाम।
मंगल करें गुरु गज पंतक, जिनवर गुरुपद 'विशद' प्रणाम।।

(इत्याशीर्वादः इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जाप्य : ॐ नमोऽहर्त भगवते देवाधिदेवाय सर्वोपद्रवविनाशनाय सर्वापमृत्युञ्जय कारणाय सर्वसिद्धिकराय ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ॐ ॐ क्रौं क्रौं ठः ठः झं वं ह्वः पः हः क्षिं हं सः अ सि आ उ सा अर्हं अस्माकं मृत्युं घातय–घातय आयुष्यं वर्धय वर्धय स्वाहा।

प्रशस्ति

वृषभादिक चौबीस जिन, जग में हुए महान्।
उनके चरणों में नमन, जिनका तीर्थ प्रधान।।1।।
गौतमादि गणधर परम, कुन्दकुन्द आचार्य।
आदिसागराचार्य की, परम्परागत आर्य।।2।।
विमल सिन्धु के शिष्य हैं, भरत सागराचार्य।
विराग सिन्धु दीक्षा दिए, बने विशद आचार्य।।3।।
प्रेरित हो जिन भक्ति से, मृत्युञ्जयी विधान।
पद्यमयी रचना शुभम्, कर कीन्हा गुणगान।।4।।
वीर निर्माण पच्चीस सौ, छत्तिस माघ महान।
तिथि पञ्चमी शुक्ल की, अतिशय रही प्रधान।।5।।
जिला कहा अजमेर शुभ, सावर है इक ग्राम।
रचना करके पूर्ण यह, लिया विशद विश्राम।।6।।
पूजा करके भाव से, पाओ पुण्य निधान।
भूल-चूक को भूलकर क्षमा करो धीमान्।।7।।

।। इति मृत्युञ्जय पूज्य विधान सम्पूर्ण।।

मृत्युञ्जय विधान की आरती

मृत्युञ्जय की करते हैं हम, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर घी के लाए, जिनवर के दरबार।
हो जिनवर हम सब उतारें मंगल आरती....
मृत्यु को जीता है तुमने, सारे कर्म विनाशे।
सिद्ध शिला पर धाम बनाया, आतम ज्ञान प्रकाशे।। हो जिनवर..।।1।।
तुम्हें पूजने वाले अपने, सारे रोग नशावें।
आकस्मिक बाधाएँ कोई, कभी पास न आवें।। हो जिनवर...।।2।।
भूत-प्रेत-व्यन्तर की बाधा, भक्तों से भय खावे।
तंत्र-टोटका की बाधा भी, पास नहीं आ पावें।। हो जिनवर..।।3।।

मृत्युञ्जय की पूजा करके, मृत्युञ्जय को पावें।
करते आरती भक्ति भाव से, निज के गुण प्रगटावें।। हो जिनवर..।।4।।
विमल गुणों में अवगाहन कर, भरत क्षेत्र में आवें।
राग-त्याग पाके विराग फिर, 'विशद' गुणों को पावें।। हो जिनवर..।।5।।

महामृत्युञ्जय चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
मृत्युञ्जय हम पूजते, चरणों में धर शीश।।

चौपाई

कर्म घातिया चार नशाए, अतः आप अर्हत् कहलाए।
अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाए, दर्शन ज्ञान-वीर्य सुख पाए।।
दोष अठारह पूर्ण नशाए, छियालिस गुणधारी कहलाए।
चौतिस अतिशय जिनने पाए, प्रातिहार्य आठों प्रगटाए।।
समवशरण शुभ देव रचाए, खुश हो जय-जयकार लगाए।
समवशरण की शोभा न्यारी, उससे भी रहते अविकारी।।
देव शरण में प्रभु के आते, चरण-कमल तल कमल रचाते।
सौ योजन सुभिक्षता होवे, सब प्रकार की आपद खोवे।।
भक्त शरण में जो भी आते, चतुर्दिशा से दर्शन पाते।
गगन गमन प्रभु जी शुभ पाते, प्राणी मैत्री भाव जगाते।।
प्रभो ! ज्ञान के ईश कहाए, अनिमिष दृग प्रभु के बतलाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाते, सुर-नर-पशु सुनकर हर्षाते।।
मृत्युञ्जय जिन प्रभु कहाते, जीत मृत्यु को शिव पद पाते।
ज्ञान अनन्त दर्श सुख पाते, वीर्य अनन्त प्रभु प्रगटाते।।
सिद्ध सनातन आप कहाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।
अनुपम शिवसुख पाने वाले, ज्ञान शरीरी रहे निराले।।
नित्य निरंजन जो अविनाशी, गुण अनन्त की हैं प्रभु राशि।
तुमने उत्तम संयम पाया, जिसका फल यह अनुपम गाया।।

रत्नत्रय पा ध्यान लगाया, तप से निज को स्वयं तपाया।
कई ऋद्धियाँ तुमने पाईं, किन्तु वह तुमको न भाईं।।
उनसे भी अपना मुख मोड़ा, मुक्ति वधू से नाता जोड़ा।
सहस्र आठ लक्षण के धारी, आप बने प्रभु मंगलकारी।।
सहस्र आठ शुभ नाम उपाए, सार्थक सारे नाम बताए।
नाम सभी शुभ मंत्र कहाए, जो भी इन मंत्रों को ध्याए।।
सुख-शांति सौभाग्य जगाए, अपने सारे कर्म नशाए।
विषय भोग में नहीं रमाए, रत्नत्रय पा संयम पाए।।
तीन योग से ध्यान लगाए, निज स्वरूप में वह रम जाए।
संवर करे निर्जरा पावे, अनुक्रम से वह कर्म नशावे।।
बीजाक्षर भी पूजें ध्यावें, जिनपद में नित प्रीति बढ़ावें।
कभी मंत्र जपने लग जाए, कभी प्रभु को हृदय बसाए।।
स्वर व्यंजन आदि भी ध्याए, अतिशय कर्म निर्जरा पाए।
पुण्य प्राप्त करता शुभकारी, शिवपथ का कारण मनहारी।।
इस भव का सब वैभव पाए, उसके मन को वह न भाए।
तजकर जग का वैभव सारा, जिनने भेष दिगम्बर धारा।।
वह बनते त्रिभुवन के स्वामी, हम भी बने प्रभु अनुगामी।
यही भावना रही हमारी, कृपा करो हम पर त्रिपुरारी।।
मृत्युञ्जय हम भी हो जाएँ, इस जग में अब नहीं भ्रमाएँ।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का नाथ सहारा।।
शिव पद जब तक ना पा जाएँ, तब तक तुमको हृदय सजाए।
नित-प्रति हम तुमरे गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
सुत सम्पत्ति सुगुण पा, होवे इन्द्र समान।
मृत्युञ्जय होके 'विशद', पावे पद निर्वाण।।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

पेज-26-30

(चौबोला छंद)

जिनने कर्म घातिया नाशे, केवलज्ञान प्रकाश किया।
दोष अठारह से विरहित हो, निज स्वभाव में वास किया।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
अर्हन्तों के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रां अनन्तचतुष्टयादि लक्ष्मीविभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए फिर, अष्ट सुगुण प्रगटाए।
ज्ञान शरीरी हुए महाप्रभु, अष्टम वसुधा को पाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
जिन सिद्धों के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठ-भस्मीकुर्वते सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षा दीक्षा देने वाले, पालन करते पञ्चाचार।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, मुक्ती पथ के हैं आधार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
जैनाचार्यों के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।10।।

ॐ ह्रूँ पञ्चाचार-परायणायाचार्य-परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, पाठी मुनिवर रहे महान्।
पच्चिस मूलगुणों के धारी, उपाध्याय हैं जगत प्रधान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, बनाकर उनके चरण चढ़ाते हैं।
उपाध्यायों के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रौं द्वादशांग-पठनपाठनोद्यताय उपाध्याय-परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की आशा के त्यागी, हैं आरम्भ परिग्रह हीन।
रत्नत्रय के धारी मुनिवर, ज्ञान ध्यान तप रहते लीन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, उनके चरण चढ़ाते हैं।
सर्व साधुओं के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।12।।

ॐ ह्रः त्रयोदश-प्रकारचारित्राराधकसाधु-परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्जः नशे घातिया.....)

कर्म घातिया नाश किए प्रभु, अर्हत् पदवी पाए।
केवलज्ञान जगाने वाले, मंगल प्रथम कहाए।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलायाघ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिविध कर्म से रहित हुए हैं, आठों कर्म नशाए।
सिद्ध शिला पर धाम बनाया, मंगल सिद्ध कहाए।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।14।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलायाघ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता भाव धारने वाले, रत्नत्रय के धारी।
सहते हैं उपसर्ग परीषह, साधू मंगलकारी।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।15।।

ॐ ह्रीं साधुमंगलायाघ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म केवलज्ञानी कृत, जानो जग हितकारी।
सुख शांति सौभाग्य प्रदायक, जग में मंगलकारी।।
मंगलमय पद पाने वाले, मंगलमय कहलाते।
चरण कमल में शीश झुकाकर, पावन अर्घ्य चढ़ाते।।16।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्म-मंगलायाघ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज : नन्दीश्वर श्री जिन धाम.....)

हे लोकोत्तम ! अरहन्त, जग-जन हितकारी।
हो जाए भव का अन्त, भव-भव दुख हारी।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव-भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हन्त लोकोत्तमायाघ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सिद्ध शिला के ईश, शिव सुख के कर्त्ता।
हे लोकोत्तम ! जगदीश, कर्मों के हर्त्ता।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्यादि निर्ग्रंथ, रत्नत्रय धारी।
यह लोकोत्तम है संत, अतिशय अविकारी।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव-भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं साधुलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी उपदिष्ट, जैन धरम जानो।
है लोकोत्तम जग इष्ट, हितकारी मानो।।
हम तीन योग से नाथ, चरणों सिर नाते।
भव-भव में पाएँ साथ, भावना यह भाते।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलिप्रज्ञप्त-धर्मलोकोत्तमायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द

शरण श्रेष्ठ है अर्हन्तों की, सारे जग में पावन।
सुख शांती आनन्द प्राप्त हो, जीवन हो मन भावन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हत्शरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शरण है मंगलकारी, हम भी शरणा पाएँ।
कर्म नाशकर अपने सारे, भव में न भटकाएँ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।22।।

ॐ ह्रीं सिद्धशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनाचार्य उपाध्याय साधु, होते पञ्चाचारी।
शरण प्राप्त हो हमको उनकी, पाने पद अविकारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएं।।23।।

ॐ ह्रीं साधुशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन धर्म केवलज्ञानी कृत, उत्तम शरण कहाये।
पाया नहीं है अब तक हमने, अत: जगत भटकाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।24।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्त-धर्मशरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेष्ठी मंगल हैं उत्तम, चार शरण सुखकारी।
भवि जीवों के लिए अनादि, होते मंगलकारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, स्वर्ण पात्र में लाएँ।
शाश्वत् पद पाने को पद में, सादर शीश झुकाएँ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि-सप्तदशमन्त्रेभ्यः समुदायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।